Ph.: Off.: 2633233/2955977
aryawani.ngp@gmail.com

|| ओ३म् ||

दयानन्द आर्य कन्या महाविद्यालय

आर्य विद्या सभा द्वारा संचालित
(Regd. under Societies Act. XXI)
जरीपटका, नागपुर ४४००१४.

Brief Report

Brief Report of Project / Field/ Internship Work (1.3.3)

Name of the Project Undertaken	Music Project on Biography Ustad Abdul Karim Khan	
Academic Session	2018-19	
Organizing Department/ Committee	Music	
Total Number of Students Participated in the Project	10	
Brief Report	The Project entitled Biography Ustad Abdul Karim Khan was undertaken by the Department of Music during the session of 2018-19 under the guidance of Internal Quality Assurance Cell of the Institution. Total 10 students participated in the project activity and successfully completed the project. The completion certificate has been given to the students. All students found it very interesting to learn through the experiential learning. They enjoyed the project work.	
Criterion :1	Metric no-1.3.3	
Signature of Co-Ordinator	Signature & Stamp of IQAC Co-Ordinator IQAC Coordinator Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya Jaripatka, Nagpur	Signature of & Stamp of Principal Principal

Ph.: Off.: 2633233/2955977
aryawani.ngp@gmail.com

|| ओ३म् ||

दयानन्द आर्य कन्या महाविद्यालय

आर्य विद्या सभा द्वारा संचालित
(Regd. under Societies Act. XXI)

जरीपटका, नागपुर ४४००१४.

Students Information

S.N.	Name of Student	Program	Class
1	Kajal Roshan Patel	B.A.	B.A II
2	Payal Chhedanlal Katre	B.A	B.A II
3	Rachana Sanjay Bansod	B.A	B.A II
4	Aditi Paparao Sahare	B.A	B.A.II
5	Disha Narayan Motghare	B.A	B.A II
6	Viveka Arvind Sontakke	B.A	B.A II
7	Payal Waman Gajbhiye	B.A	B.A II
8	Akansha Yuvraj Tirpud	B.A	B.A II
9	Nikita Bablu Kareade	B.A	B.A II
10	Arpita Ramesh Bhalsare	B.A	B.A II

I

Front Page of Project

Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya

Jatipratha Nagpur

Music project on Biography

Ustad Abdul Karim Khan

Class:-B.A II year

Session:-2018-19

Project submission by :-

Ku. Kajal Roshan Patel

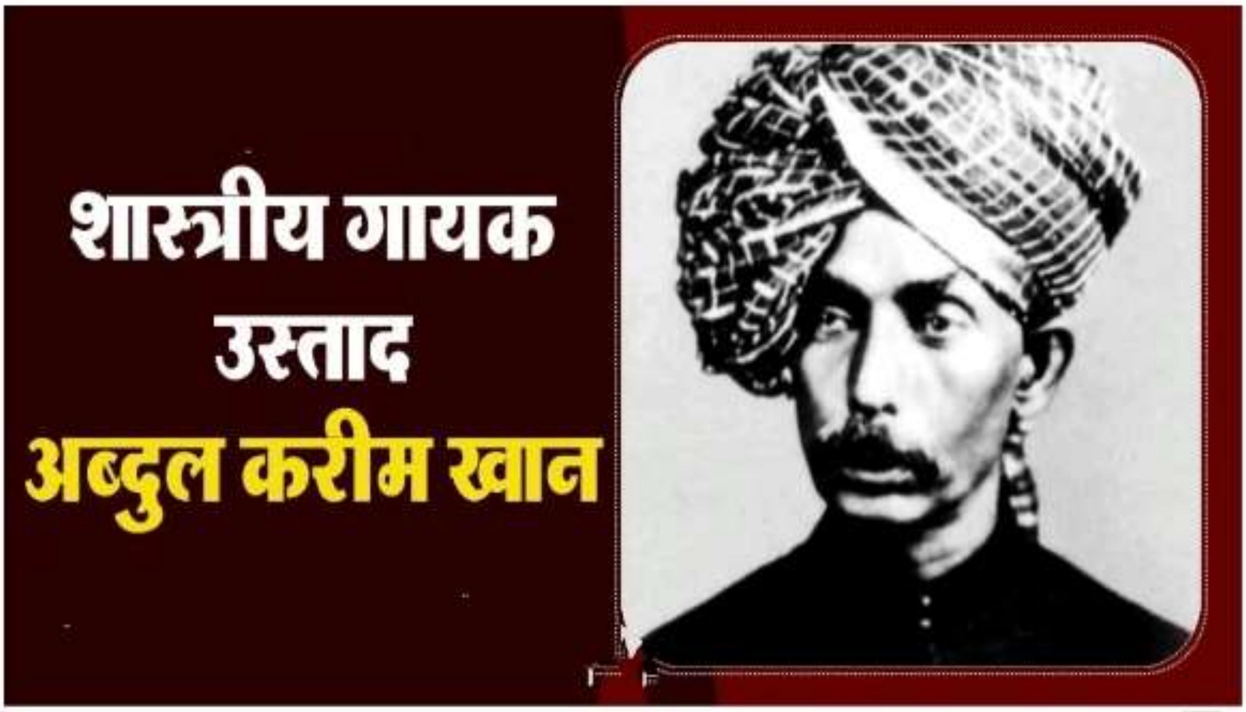

//ARYA VIDYA SABHA’S

DAYANAND ARYA KANYA MAHAVIDYALAYA

Jaripatka, Nagpur

MUSIC PROJECT

Organised By

Department of MUSIC

CERTIFICATE

This is certify that project wark in the Music entitled Biography Ustad Abdul Karim Khan has been successfully completed by ku.Kajal Roshan Patel of B.A ll Year during the Academic session 2018-19Hence the certificate is awarded to her.

Co-Ordinator
Mrs Anita Sharma
Dept. of Music
DAKM, Nagpur

Principal .
Dr. Shraddha Anilkumar
DAKM, Nagpur

Project copy

विषय का चुनाव

अब्दुल करीम खान 20वी सदी के हिंदुस्तानी संगीत में सबसे महत्वपूर्ण हस्तियों मे एक है, उन्होने अपनी गायन शैली मे जो नवीनता लाई वह किराना शैली को औरो से अलग करती है, उन्होने अपनी आवाज को मधुर और सुरीली बनाए रखने के लिए कड़ी मेहनत की जिसने उनके संगीत को आकार दिया, वह कर्नाटक प्रणाली का गंभीरता से अध्ययन करने वाले पहले हिंदुस्तानी संगीतकार थे, खाँ साहब उत्तर और दक्षिण भारतीय संगीत के बीच में एक बाध की तरह थे, संगीत के प्रति उनका योगदान तथा उनके समरपण के भाव को और उसके पीछे के उनके ~~मेहनत~~ कठिन परिश्रम को ज्ञात करना ही मेरा उद्देश्य था।

अब्दुल करीम खाँ जी ने संगीत जगत को कई महान कलाकार दीये, जैसे - हिराबाई बडोदकर, सरस्वती राने, रोशन आरा बेगम, सुरेश बाबू माने, पंडित रामभाई बहरे बुआ आदि। इन सभी क संगीतज्ञो का ज्ञान हो, संगीत के प्रती उनकी मेहन और संघार्ष को ज्ञात कर उससे प्रेरणा ले सके तथा दुसरो तक भी पोहचा सके इसलिए हम ने इस विषय का चुनाव किया है।

उद्देश्य

★ अब्दुल करीम खाँ आरंभिगत ख्याल में लयकारी और बोल तान की अपेक्षा आलाप पर अधिक ध्यान देते थे,

★ उस्ताद अब्दुल करीम खाँ उत्कृष्ट ख्याल ख्याल गायकी के साथ ठुमरी दादरा भजन और मराठी नाट्य संगीत : गायन मे भी निपुण थे ।

★ करीम खान जी को संगीत रत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया था । हर वर्ष अगस्त मे उनकी याद में मिराज मे स्मारक संगीत आयोजित किए जाते है,

★ अब्दुल करीम खाँ जी ने 1913 मे छात्राओ को पढ़ाई के लिए पुणे मे आर्य संगीत विद्यालय की स्थापना की ।

★ उस्ताद अब्दुल करीम खान की कल्पना विस्तृत तथा संगीत के प्रति उनकी निष्ठा अनूठी थी ।

उस्ताद अब्दुल करीम खाँ

खाँ साहब किराना के निवासी थे इनके घराने में प्रसिद्ध गायक तंत्रकार व सारंगी वादक हुआ है इन्होंने अपने पिता काले खाँ व चाचा अब्दुल्ला खाँ से संगीत शिक्षा प्राप्त की थी ये बचपन से ही बहुत अच्छा गाने लगे थे कहा जाता है कि पहली बार जब इन्हें एक संगीत महफिल मे पेश किया गया तब इनकी उम्र केवल छः वर्ष की आपको तत्कालीन बड़ौदा नरेश ने अपने यहाँ दरबार - गायन नियुक्त कर लिया बड़ौदा मे तीन वर्ष तक रहने के पश्चात 1902 ई मे प्रथम बार आप बम्बई आए और फिर मिरज गए मधुर और सुरीली आवाज तथा हृदयग्राही गायकी के कारण दिनो - दिन इनकी लोकप्रियता बढ़ती गई।

सन 1913 ई के लगभग पुना मे आपने आर्य संगीत विद्यालय की स्थापना की विविध संगीत जलसो के द्वारा धन इकट्ठा कर आप इस विद्यालय को चलाते थे गरीब विद्यार्थियो का सभी खर्च विद्यालय उठाता था इसकी विद्यालय की एक शाखा 1917 ई में खाँ साहब ने बम्बई मे स्थापित की और तिन वर्षो तक बम्बई मे आपको रहना पड़ा इन दिनो आपने एक कुत्ते को बड़े विचित्र ढंग से स्वर देने के लिए सिखा लिया

था, बंबई मे आज भी ऐसे व्यक्ति मौजूद है जिन्होने अमरौली हाउस बंबई के जलसे मे उस कुल्ले को स्वर देते हुए सुना था कई कारणों से सन् 1920 मे यह विद्यालय उन्हे बन्द कर देना पडा, फिर खाँ साहब मिरज आकर बस गए और अन्त तक वही रहे।

खाँ साहब गोबरहारी वाणी की गायकी गाते थे महाराष्ट्र मे मींड और कणयुक्त गायकी के प्रसार का श्रेय खाँ साहब को ही है, इनके आलापो मे अखडता व एक प्रवाह-सा प्रतीत होता था। सुरीलेपन के कारण आपका संगीत अंतःकरण को स्पर्श करने की क्षमता रखता था पिया बिन नाही आवत चैन" आपकी यह ठुमरी बहुत प्रसिद्ध हुई इसे सुनने के लिए कला-मर्मज्ञ विशेष रूप से फरमाइश किया करते थे। यद्यपि आप शरीर से कमजोर थे, किंतु आपका स्वभाव अत्यंत शान्त और सरल था। आप एक फकीरी वृत्ती के गायक थे,

खाँ साहब की शिष्य-परंपरा बहुत विशाल थी प्रसिद्ध गायिका हीराबाई बडोदेकर ने खाँ साहब से ही किराना घराने की गायकी सीखी इनके अतिरिक्त सवाई गंधर्व रोशन आरा बेगम आदि अनेक शिष्य व शिष्याओं द्वारा आपका नाम रोशन हो रहा है।

एक बार वार्षिक अवसर पर आप मिरज आए थे, कुछ लोगो के आग्रह से एक जलसे मे वहा से मद्रास जाना पडा वहाँ पर आपका एक संगीत कार्यक्रम मे गायन इतना सफल रहा कि उपस्थित जनता ने आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा की, फिर एक संस्था की

सहायता जलसे करने के लिए वहाँ से पांडिचेरी जाने का निश्चय हुआ इस यात्रा में ही खाँ साहब की तबियत खराब हो गई और रात्री के 11 बजे शिगुमो - समकोलम स्टेशन पर उतर गए। बेकेली बढ़ती गई कुछ देर इधर- इधर टहलने के बाद बिस्तर पर बैठ गए ; समाज पढ़ी और फिर दरबारी कानडा के स्वरों मे खुद की इबादत करने लगे, इस प्रकार अब्दुल करीम खान को संगीत रत्न की उपाधि से सम्मानित किया

आपकी याद मे प्रतिवर्ष अगस्त मे मिराज मे स्मारक संगीत समारोह आयोजित किए जाते है, अब्दुल करीम खान की मृत्यु 27 अक्टूबर 1937 में मिराज में जब वे दक्षिण के कण संगीत कार्यक्रम के दौरे से लौट रहे थे तब हुई।

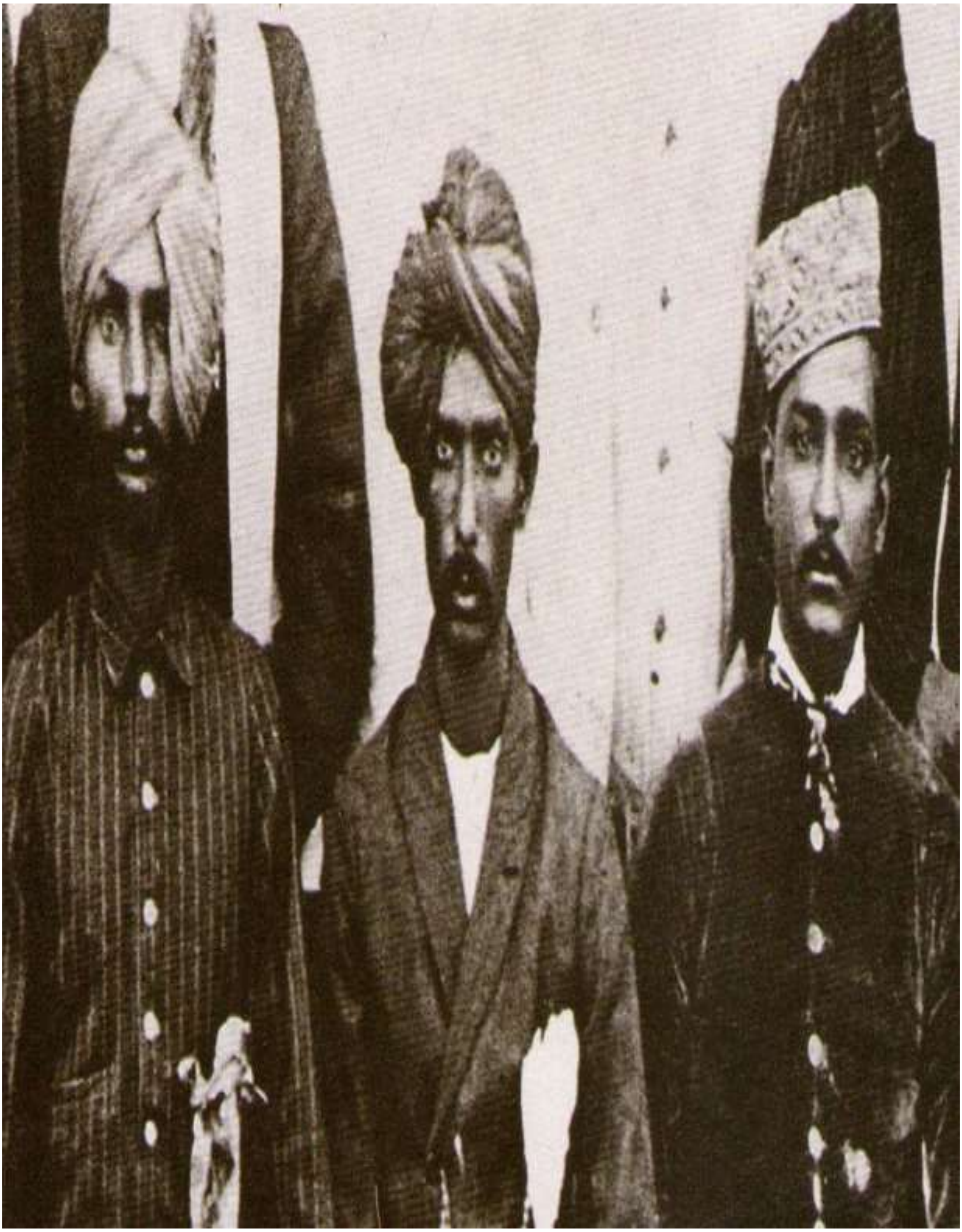

y

निष्कर्ष

उपर्युक्त विषय के बारे
ज्ञान होने के बाद यह ज्ञान निकाला गया
की उस्ताद अब्दुल करीम खान 20 वी
सदी के भारतीय संगीतज्ञ कलाकार हुआ
हमारे भारतीय संगीत जगत को ऐसे
ही महान वीद्वानो की आवश्यकता है.
उस्ताद अब्दुल करीम खाँ संपुर्ण संगीत जगत के
लीए प्रेरणा है. उस्ताद अब्दुल करीम खाँ
जैसे महान संगीत प्रेमीयो का जिवन लोगो
को जिवन मे मेहन कर अपने लक्ष्य को
प्राप्त करने का हौसला देता है. खान जी
का जिवन परिचय हमे संगीत के प्रती
हमे और जागरुक बनाता है.